

REET परीक्षा 2025

महत्वपूर्ण नोट्स PDF

(टॉपिक : शिक्षाशास्त्र)

PDF : Get Link

Rajasthanclasses.in

हर भर्ती की न्यूज सबसे पहले..

यहां उपलब्ध रहेगी  

Latest News : Get Link

शिक्षण → सामान्य तर्ज "सीखना"
 शिक्षण उद्देश्यपूर्ण सामाजिक क्रिया होती है जिसमें
 निम्नी विषय वस्तु को आधार मानकर एक शिक्षक
 शिक्षार्थी को अपने अनुभवों द्वारा सीखाता है।

जार्ज

रंकीन
 शिक्षण पूर्व नियोजित
 निश्चित विषयवस्तु
 निश्चित स्थान, समय
 जाबाबी के लिए ही जाने
 वाली शिक्षा है।
(औपचारिक)

व्यापक
 शिक्षण जीवितपर्यंत
 चलने वाली प्रक्रिया है
 जिसमें एक व्यक्ति अपने
 परिवार, समाज, कार्यस्थल
 आदि पर सीखता रहता है
(अनौपचारिक) निरौपचारिक

रायबर्न → शिक्षण के 3 बिन्दु
 शिक्षक
 शिक्षार्थी
 पाठ्यवस्तु

इन तीनों के अन्तर्संबंधों को शिक्षण कहा जाता है।

रकीकर → शिक्षण पुनर्बलन आकरमेकताओं का क्रम है।

उ.०. रविश → अधिगम को प्रेरित करने वाली क्रियाओं की प्रणाली
 शिक्षण कहलाती है।

शिक्षण के चर → शिक्षक → स्वतंत्र चर
 शिक्षार्थी → परतंत्र / आश्रित चर
 पाठ्यक्रम → बाध महत्वस्थ चर

शिक्षक की आवश्यकता / चरण

1. प्राक आवश्यकता - नियोजन
2. अन्तः क्रिया आवश्यकता - शिक्षण - अधिगम अनुभव
3. पश्च क्रिया आवश्यकता - मूल्यांकन

I.K. उक्ति → शिक्षण को सर्वांगीण व्यावसायिक किया गया है

↳ चरण शिक्षण के -

- (i) नियोजन
- (ii) संगठन
- (iii) अनुसरण
- (iv) नियंत्रण

शिक्षण के प्रकार →

1. औपचारिक शिक्षण → यदि शिक्षण के लिए विषयवस्तु, समय, स्थान, अवधि पूर्व निर्धारित व पूर्वनियोजित हो,।
2. अनौपचारिक " → यदि कोई भी परिस्थिति पूर्व नियोजित नहीं हो,।
3. मिश्रित औपचारिक " → इसमें केवल पाठ्यवस्तु पूर्व निर्धारित होती है।

शिक्षण के स्तर →

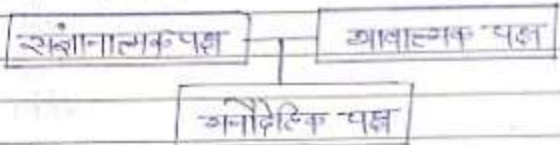
1. ज्ञान स्तर → (हर्बर्ट)
केवल तथ्य, सूचना, जानकारी प्रदान की जाती है।
2. अवलोकन स्तर → (गोरेमैन)
प्रप्त ज्ञान के प्रति समझ विकसित
3. कौशल स्तर → (ह्यू)
उच्च मानसिक कलाता से संबंधित

विज्ञान उद्देश्य -

व्यापक उद्देश्य		विशिष्ट उद्देश्य
1.	दीर्घ कालीक	दल्प कालिक
2.	प्रकृति - दार्शनिक/सैद्धांतिक	गैर-गैर-वैज्ञानिक
3.	कक्षाकक्ष के साथ अप्रत्यक्ष संबंध	प्रत्यक्ष संबंध
4.	दावता - व्यापक	सांकीर्ण

ड.ड. ब्लूम - विज्ञान उद्देश्यों का वर्गीकरण -

संचार के पक्ष -



संज्ञानात्मक पक्ष	आवात्मक पक्ष	क्रियात्मक पक्ष
ज्ञान, सूचना, आत्मिक प्रक्रिया	आव, विचार	व्यक्ति, ज्ञान संचार
↓	↓	↓
आंतरिक	हृदय	कौशल

प्रतिपादक - D.S. Bloom	D.S. Bloom, जेवलाप,	स्किपरान
1956	मसीदा 1967	1963

ज्ञान	आश्रय	उद्दीपन - अनुभवा
अवलोकन	अनुभवा	सर्व-वस्था
ज्ञानोपयोग	अनुभवजन्य	निवृत्त/परिपुष्ट
विश्लेषण	आवधारणा	अभिव्यक्त
संश्लेषण	संश्लेषण/व्यक्तशक्ति	आवधारणा
मूल्यांकन	वैज्ञानिकीकरण	आवधारणा
		आवधारणा
		निर्माण

NGERT के अनुसार शिक्षण →

अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन

1. ज्ञानात्मक उद्देश्य → तथ्य, सूचना, सूत्र, नियम, सिद्धांत की जानकारी
 - परिभाषित करना
 - प्रत्याख्यान
 - प्रत्याखरण

2. ज्ञानबोध्यात्मक उद्देश्य → व्याख्या
 - सही उदाहरण
 - विभेद करना/अंतर
 - संबंध स्थापित करना
 - त्रुटि का पता लगाना

3. ज्ञानोपयोग उद्देश्य → प्राप्त ज्ञान का व्यावहारिक परिस्थितियों में उपयोग
 - त्रुटि में सुधार
 - समस्या समाधान के विभिन्न तरीके ढूँढना जिनमें से सर्वश्रेष्ठ का चयन करना

4. कौशल/आत्मक उद्देश्य → तालिका निर्माण
 - उपकरण त्रुटि में सुधार
 - चार्ट, चित्र, ग्राफ बनाना

5. अभिरूपात्मक उद्देश्य → पत्र-पत्रिकाओं का संकलन
 - विषय के प्रति सवि, अकरिकट, संकलन महापुरुषों की जीवनीयां पढ़ना
 - विषय आह्लासक के साथ सुबुर संबंध

6. अभिवृत्त्यात्मक उद्देश्य → विषय के प्रति दृष्टिकोण
 - विषय को चरल समझना
 - समस्या समाधान के लिए (समस्यात्मक दृष्टिकोण)

शिक्षण आधिगम सहायक सामग्री

शिक्षण आधिगम प्रक्रिया के दौरान शिक्षक द्वारा प्रयोग में ली गई समस्त सामग्रीया जो शिक्षक की उद्देश्य पूर्ति में सहायक हो तथा छात्रों के लिए आधिगम में सुगमता प्रदान करें, "शिक्षण आधिगम सहायक सामग्री" कहलाती है।

शिक्षक के लिए उपयोगी → उद्देश्य पूर्ति में सहायक
 ↓ विषय वस्तु अर्थता व श्रेयकता के साथ स्पष्ट रूप में प्रस्तुती

छात्र " → परिभाषायाली - चित्त में गतिशीलता
 ↓ अंद बुद्धि बालक - सुदृढ संप्रत्ययो को समुल रूप में समझने में सहायक

शिक्षण आधिगम सहायक सामग्री के प्रकार →

A. अक्रियो के आधार पर -

1. द्रव्य सामग्री → स्पीकर, रेडियो, ग्रामोफोन, लिग्वाफोन
2. दृश्य सामग्री → चार्ट, बोर्ड, मानचित्र
3. द्रव्य-दृश्य सामग्री → T.V., सिनेमा

B. तकनीकी के आधार पर -

1. सूदु उपागम - पुस्तक, नोट्स, चार्ट, श्लोक
2. कठोर उपागम - रेडियो, T.V., प्रोजेक्टर

C. प्रक्षेपण के आधार पर -

1. प्रक्षेपित सहायक सामग्री - प्रोजेक्टर एवं संबंधित सामग्री
2. अप्रक्षेपित " " - रेडियो, T.V.

D. NCERT के अनुसार -

1. व्याफिक्स सामग्री - कार्टन, कॅमिक्स
2. प्रदर्शन " - चार्ट, मानचित्र, बुलेटिनबोर्ड, श्लोकपट
3. मिजावागी " - बोर्ड, वास्तविक फ्लार्ड
4. द्रव्य सामग्री - रेडियो, लिग्वाफोन, ग्रामोफोन आदि
5. प्रक्षेपी " -
6. प्रक्रिया " - नाटक, क्षेत्र अगण

प्रमुख शिक्षक साहायक सामग्रीयाँ →

1. स्लायड पट (Blackboard)

- अवधारणा - विलियम जेम्स
- परंपरागत सामग्री
- प्रदर्शन सामग्री
- शिक्षक का परम मित्र
- गणित विषय सर्वा. उपयोगी
- उपयोग - लघु चित्रों को लिखने के लिए
- वर्तमान में हरित पट का प्रयोग करते हैं

(Operation Blackboard)

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के तहत 1987-88 में
- विद्यालयों में न्यूनतम आवश्यक साधन उपलब्ध करवाने के लिए

2. रोलर फ्लैट (Roller Board)

- छात्राध्यापकों द्वारा प्रयुक्त
- छोट कार्य लिखकर ले जाया जाता है

3. प्रत्यक्ष वस्तु (Real Object)

- सर्वा. प्रयावशाली सामग्री
- छोट, सिकके, नोट

प्रति कृति (Model)

- श्लोष - पृथ्वी का सर्वश्रेष्ठ मॉडल

4. चार्ट - शिक्षक द्वारा सर्वा. प्रयोग में ली जाने वाली साहायक सामग्री

- शिक्षक प्रक्रिया का कंकाल तंत्र

उपयोग → 3-5 रूप में ऊपर हुए चित्र

वेब्यालिया → संस्कृति/रचना विशेष से संबंधित प्रत्यक्ष वस्तु

फ्लेनल बोर्ड → कक्षा-कक्षा के छात्र स्थित होता है
 - प्रयोग - लघु चित्र प्रदर्शित करने हेतु

ल्युमिनेशन बोर्ड → सूचना पट्ट, निर्माण - चयनकीला जोरा कपडा नीला
 रंगीली - कक्षा - कक्षा के छात्र विद्यालय परिसर में

ग्रामोफोन → संगीत शिक्षा प्रदान करने के लिए, (न्यूजीवाजा)

लिंग्वाफोन → बालको के उच्चारण संबंधी दोषों को दूर करने
 के लिए, (सीतावाद्य)

प्रोजेक्टर (प्रक्षेपक यंत्र) → कांच की पारदर्शी स्लाइड

1. जय स्कोप → जाइव लातेन, बेंजिक लेन्टर्न, माया ड्रिप
2. एपि स्कोप → छोटे चित्र, बाल्य वस्तुओं को बिना स्लाइड
 के प्रक्षेपित किया जा सकता है
3. एपिडाइरस्कोप → एपिस्कोप + जाइस्कोप

4. OHP → Over Head Projector ^{शिरोपरि प्रक्षेपक यंत्र}
 प्लास्टिक शीट पर बने चित्रों को
 प्रदर्शित

5. LCD Projector → Liquid Crystal display Projector

6. LED Projector → Light emitting diode

7. DLP Projector → Digital Light Processing

8. Radio → आविष्कार - गार्गेनी
 वाणीजी - अद्वैतवस्तु

9. टेलीविजन → आविष्कार - ज. L. बेर्ड
 दूरव - श्राव्य सागरी

चित्र पट्टिका (Film Strip) सेल्यूलोज एसीटेट द्वारा निर्मित 35mm
- कोर्ड की स्थिर चित्र पट्टिका चित्र पर
कोई ऐतिहासिक/विशेष रंगीन चित्र

[गणितीय सहायक सामग्री]

उबेकस → गिनतारा, निर्माण - चीन
प्रयोग - आधासूत घननाए सीखने के लिए

Tengram → चीनी पहेली
5/7 ब्लॉक से निर्मित अलग-अलग आकृतियों में
खंड होते हैं।
प्रयोग - छोटे बच्चों में स्थानिक समझ विकसित करने

^{Imp} किसर्पी गणक → आविष्कारक - विलियम आउटवेस
प्रयोग - गुणा करने के लिए

खिन फिट → आधासूत खिन अवधारणा जैसे $\frac{1}{2}, \frac{1}{4}, \frac{1}{8}$
आदि समझने के लिए \ominus, \oplus

उबेकस ब्लॉक → छोटे बालकों में $\frac{1}{10}, \frac{1}{100}, \frac{1}{1000}$ अवधारणा
विकसित करने के लिए,

किविनेयर की छुड़े → छोटे बच्चों में खिन संबंधी अवधारणाओं
विकसित करने के लिए अलग-अलग रंग
की छुड़े का प्रयोग किया जाता है - $\frac{1}{2}, \frac{1}{4}, \frac{1}{8}$

Grid paper → छोटे बच्चों में गुणा संबंधी दक्षता विकसित
करने हेतु

Graph paper → ज्यामितीय आकृतियों के जोड़ व घटाव सीखाने हेतु, विभिन्न आकृतियों के निर्माण हेतु

Geoboard → ज्यामितीय आकृतियों के बारे में जानकारी देने हेतु लकड़ी का बना बोर्ड होता है जिस शमत पूरी पर कीले लगी होती है, गिन पर स्क्वैड बेंड द्वारा आकृतियों का निर्माण किया जाता है।

सेक्सटेण्ट → प्रेक्षक द्वारा कोण मापने के लिए

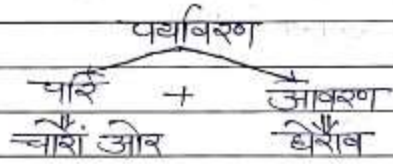
जियोमेट्रा → Website/app हैं, जिसमें विभिन्न प्रकार की द्विविमीय (2D) व त्रिविमीय (3D) आकृतियों का निर्माण किया जाता है।

पर्यावरण अध्ययन

पर्यावरण → Environment

↳ French → Environer
language

↳ अर्थ - पर्यावरण

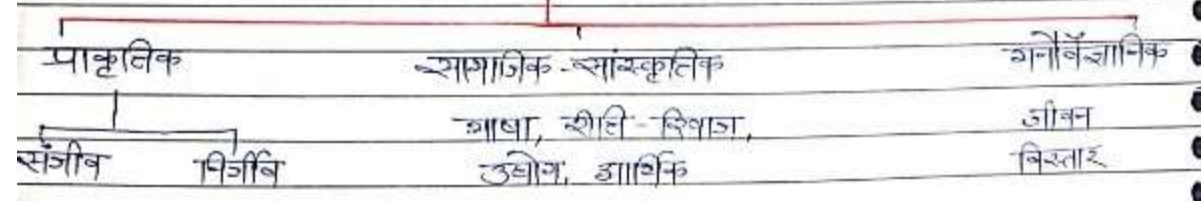


According to विश्वकोष → पर्यावरण किसी मनुष्य के लिए वे सभी दृश्यों, स्थिति व प्रभाव का योग है जिसे किसी भी जीव का / प्रजाति का उद्भव, विकास, मृत्यु प्रभावित होती है।

C. पार्क → कोई मनुष्य किसी विशेष स्थिति व विशेष समय में जिन परिस्थितियों से घिरा होता है पर्यावरण कहलाती है।

फिटिंग → पर्यावरण किसी जीव के समस्त परिस्थितिकी कारकों का योग है।

कुटुंब लेबिंग



1. प्राकृतिक पर्यावरण → सगरस्त निर्माण व न्याजीव कारको से मिलकर प्राकृतिक पर्यावरण का निर्माण होता है।

2. सामाजिक-सांस्कृतिक → मनुष्य अपने बुद्धि-बल व ज्ञानिक क्षमताओं द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण में परिवर्तन कर जिस पर्यावरण का निर्माण करता है उसे सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण कहते हैं।

3. मनोवैज्ञानिक → प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्राकृतिक व सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण किसी समय विशेष व स्थिति विशेष के लिए स्फुरागम होता है, परंतु मनोवैज्ञानिक पर्यावरण बिन-बिन होता है।
Note → इसके कुर्ट लेविन ने सबसे महत्वपूर्ण व्याना है।
 उन्होंने इसे "जीवन विस्तार" की संज्ञा दी।

पर्यावरण अध्ययन → प्राकृतिक व सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण के अन्तर्संबंधों का अध्ययन "पर्यावरण अध्ययन"।

पर्यावरण अध्ययन का प्रादुर्भाव → राष्ट्रीय पाठ्यचर्या संशोधन - 1975 के तहत एक नीतिगत दस्तावेज "दस वर्षीय स्कूल पाठ्यक्रम: एक संशोधन" में प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा देने के लिए निम्न प्रकार से व्यवस्था की गई।

प्राथमिक स्तर → कक्षा 1, 2 - प्राकृतिक पर्यावरण + सामाजिक पर्यावरण
 कक्षा 3, 4, 5 - सामाजिक विज्ञान + विज्ञान - सामाजिक अध्ययन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 व राष्ट्रीय पाठ्यचर्या संशोधन - 1988 (NCF) में भी NCF-1975 के प्रावधानों को दोहराया गया।

NCFSE 2000 → पर्यावरण शिक्षा को एकीकृत रूप में अपनाया गया।

NCFSE 2000 → कक्षा 1, 2 - पर्यावरण
 → कक्षा 3, 4, 5 - सामाजिक अध्ययन

NCF 2005 → कक्षा 1, 2 → प्राकृतिक व सामाजिक पर्यावरण व्यापक व गणित के साथ पढ़ाया जाएगा
 → अलग से पाठ्यपुस्तक की आवश्यकता नहीं है
 → कक्षा 3, 4, 5 → एकीकृत रूप सामाजिक अध्ययन

NCF 2005 में पर्यावरण अध्ययन के लिए 6 विषय चुने गये जिन्हें बीन कहा गया है इस बीन पर आधारित पाठ्यक्रम तैयार किया गया।

बीन -

- | | |
|-----------------|-----------------------------|
| 1. परिवार व मित | 4. पानी |
| 2. भोजन | 5. याता |
| 3. आश्रय | 6. हम जो करते तथा करते हैं। |

पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्य :-

1. बालक को विभिन्न पर्यावरणीय दृश्यों के महत्व के अन्तर्संबंधों के साथ अन्तः क्रियाओं के बारे में अध्ययन करवाना।
2. आस-पास के सभी जैविक व अजैविक दृश्यों के महत्व को समझाना।
3. प्राकृतिक दृश्यों जैसे बाढ़, भूकम्प, सुनामी, सूखा आदि के कारक कारण व परिणामों से बालकों को अवगत कराना।
4. पारिवारिक संबंधों से सिखकर वैश्विक स्तर तक के संबंधों के प्रति दृष्टिकोण विकसित करना।
5. पर्यावरणीय मुद्दों जैसे जलप्रदूषण, वायुप्रदूषण, ध्वनिप्रदूषण आदि के प्रति जागरूक होना तथा जलवायु परिवर्तन,

गोस्य परिवर्तन के बारे में समझ विकसित करना।

6. जेजर संवेदनशीलता, जातिगत लुढ़े, धार्मिक लुढ़े, राष्ट्रीय हित के लुढ़े, शिक्षा, स्वास्थ्य, कुशलतियों आदि लुढ़े पर बालक का मानसिक दृष्टिकोण विकसित करना।

7. प्रारंभ से ही बालक को अवलोकन, निरीक्षण, विभिन्न प्रिया-कलाप आदि सीखाना।

8. कौशलवाचक दक्षताओं जैसे मानचित्र, चार्ट, मॉडल आदि सिखाना तथा इनके माध्यम से अवबोध करना।

पर्यावरण अध्ययन के क्षेत्र -

1. पृथ्वी की सतह, भूगर्भ, अन्तरिक्ष से संबंधित अज्ञानों का अध्ययन
2. परिवार, समाज, देश, विश्व के सामाजिक व धार्मिक संबंध
3. प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, उचित ढील
4. प्राकृतिक अज्ञानों के बारे में जानना
5. राष्ट्र, कर्तव्य, अधिकार, मानवीय मूल्य आदि नैतिक व सामाजिक लुढ़े
6. उ नियम - (i) पर्यावरण से सीखना
(ii) पर्यावरण के माध्यम से सीखना
(iii) पर्यावरण के लिए सीखना

पर्यावरण अध्ययन शिक्षण के आधिगम सिद्धांत →

- | | |
|--------------------------------|------------------------|
| 1. उद्देश्यपूर्णता का सिद्धांत | 10. नियोजन का सिद्धांत |
| 2. क्रियाशीलता का सिद्धांत | 11. चरण " " |
| 3. उपयोगिता " " | 12. आधिप्रेरणा " " |
| 4. अनुवाय व पुनरावर्ति " " | |
| 5. बेचकता का सिद्धांत | |
| 6. तत्परता " " | |
| 7. प्रभाव " " | |
| 8. वास्तविकता " " | |
| 9. जीवन संबंध " " | |

व्यक्तिगत अध्ययन शिक्षण के उपागम -

उपागम का उर्ध्व - तर्हीन / दृष्टिकोण नियुक्त वाद्ययंत्र के शिक्षण कार्य करवाया जाएगा

- (1) सह संबंध उपागम -
- (2) एकीकृत उपागम -
- (3) स्वकई उपागम - प्रवर्तक - (गोरिस्तन)
- (4) -क्रिय उपागम -
- (5) कालक्रम उपागम -
- (6) क्रमबद्ध उपागम - (निर्धीत उपागम)

शिक्षण विधियाँ -

I. खेल आधारित विधि -

- (i) किंडर गार्डन विधि - फ्रॉबेल (जर्मन शिक्षाशास्त्री)
 - इन्होंने खेल आधारित शिधियों की सर्वप्रथम विचारधारा फ्रॉबेल द्वारा प्रस्तुत की गई
 - इन्होंने पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के लिए किंडर गार्डन विधि प्रस्तुत की जिसमें इन्होंने कला जमीने सभी विद्यालय में माली सभी शिक्षक को प्रण सभी बालकों का पुर्णतः ध्यान रखना चाहिए जिस प्रकार माली स्वता है
 - इसे "बालोद्यान विधि" भी कहते हैं।

- (ii) माण्टेसरी विधि - माण्टेसरी माण्टेसरी (इटली)
 - यह विधि 3-6 वर्ष तक के बच्चों के लिए उपयोगी है
 - इन्होंने जनिप्रियों व कर्मेप्रियों के विकास पर ध्यान दिया
 - इन्होंने बालकों की भाषा शिक्षण के लिए भी विचार प्रस्तुत किये। इन्होंने भाषा शिक्षक द्वारा शिक्षण विधियों के अध्यापन के लक्षण उल्लिखित करवा दिए

- (iii) डाल्टन विधि - टेलन पार्कहर्स्ट (डिन पद्धती)

(अमेरिका का एक राज्य)

- प्रीमिती टेलन पार्कहर्स्ट ने कठोर समय बद्ध शास्त्री तथा विषय बद्धता से मुक्ति देने की बात कही
- इन्होंने निश्चित बाधों में बिना समय शास्त्री के विषय शास्त्री को स्वतंत्रता पूर्वक अधिगम करवाने की बात कही

(iv) खेल विधि → टेनरी गोल्लवेल पुन

Book - (The Play way)

→ खेल सर्वांग महत्वपूर्ण गतिविधि

- यदि आपका सर्वाधिक मन लगाकर कोई भी कार्य करता है तो वह खेल है

2. कठनी विधि →

- ऐतेदासिक समस्याओं के शिक्षण के लिए उपयोगी
- रीचकता के सिद्धांत पर कार्य करती है
- शिक्षक में कठनी प्रस्तुतीकरण का कौशल होना चाहिए

3. व्याख्यान विधि →

- यह परम्परागत विधि है
- यह निश्च विधि है
- प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए अनुपयोगी विधि

4. खेल इन्पण विधि →

- इसकी सर्वप्रथम विचारधारा पेस्टोलोनी द्वारा प्रस्तुत की गई
- आधुनिक मतिपादक - प्रोफेसर से
- यह विधि प्रत्यक्ष अनुभव के सिद्धांत पर आधारित है
- किसी स्थल का उद्देश्यपूर्ण अग्रण करना जिसके दौरान बालक वास्तविक रूप से प्रत्यक्ष अवलोकन करते हुए सिखे।

5. प्रोजेक्ट विधि →

Project शब्द → सिनार्लि द्वारा

→ यह वैमनिकल इंजीनियरिंग का शब्द है

- शिक्षा में सर्वप्रथम Project शब्द 1908 में "मैसेचुसेट्स स्टेट एजुकेशन बोर्ड" द्वारा अध्यापकों ने दौरान बालकों को ब्राह्मणी व नूर्गीपालन संबंधी बृह कार्य के सांर्ष में किया गया।

1918 में W.H. किलियेट्रिक ने अपने घोषणा The Project Method में प्रयोजना विधि का प्रतिपादन किया।

भारत में प्रयोजना विधि बुनियादी शिक्षा के लिए प्रयोग में ली गई।

Note 1937 के बुद्धावस्था शिक्षा सम्मेलन में महात्मा गांधी ने बुनियादी शिक्षा/आधारभूत शिक्षा/बेसिक तालिम नामक शिक्षा प्रणाली प्रतिपादित की

W.H किलियेट्रिक = प्रयोजना एक सहृदय उद्देश्यपूर्ण क्रिया है जिसे सामाजिक वातावरण में पूर्ण संलग्नता के साथ सम्पन्न किया जाता है।

स्थीवेशन = प्रयोजना एक समस्या मूलक कार्य है जिसे वैज्ञानिक वातावरण में पूर्ण किया जाता है

बैलार्ड = प्रयोजना दार्शनिक जीवन का एक भाग है जिसे विद्यालयी जीवन में लाया जाता है

पार्कर = प्रयोजना कार्य की इकाई है जिसकी योजना निर्माण व क्रियान्वयन की उत्तरदायित्व छात्रों का होता है

प्रयोजना विधि के चरण

1. परिस्थिति उत्पन्न करना
2. योजना का चुनाव व उद्देश्य निर्धारण
3. योजना का निर्माण
4. योजना का क्रियान्वयन
5. योजना का मूल्यांकन
6. अभिलेख संघारण

प्रयोजना के प्रकार →

I. संबंध के आधार पर →

- (i) व्यक्तिगत प्रयोजना - मानाचित बनाना, चितकषी
- (ii) सामुहिक प्रयोजना - नाटक बचन, नृत्य, विद्यालय केंद्रिय संचालन

W.H. क्लिपेडिक → Book - (The foundation of methods)
 ↳ 4 प्रकार

- (i) स्थानात्मक/सृजनात्मक/उत्पादनात्मक →
 - मुर्त उत्पाद प्राप्त, गार्डन लगाना
 - साबुन बनाना, जैली बनाना

- (ii) आध्यासात्मक/कौशलत्मक/सीखने की प्रयोजना →
 - कौशल का विकास
 - व्यायाम कार्यशाला
 - खेल प्रयोजना, नृत्य

- (iii) समस्यात्मक/बौद्धिक प्रयोजना →
 - क-प्रचलण/सुध्रियलण से संबंधित प्रयोजना
 - बिजली उत्पादन

- (iv) मनोरंजनात्मक/उपयोगात्मक प्रयोजना →
 - नाटक बचन, नृत्य प्रदर्शन
 - कहुपुतली प्रदर्शन

प्रयोजना विधि से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य →

1. प्रथम पद सबसे महत्वपूर्ण
2. थॉर्नडिक के सीखने के तीनों नियम पर आधारित
3. करके सीखना, जीपन से सीखना पर आधारित विधि
4. शिक्षक मार्गशिक की भूमिका में रहता है।

सिद्धांत →

1. उद्देश्यपूर्णता का सिद्धांत
2. वास्तविकता का सिद्धांत
3. जीवन संबंधता " "
4. समय-वय का सिद्धांत
5. सामाजिकता " "
6. सहकारिता " "
7. नियोजन " "

6. समस्या-समाधान विधि →

- इस विधि में छात्र अपनी मानसिक व्यक्तियों का प्रयोग करके हुए किसी समस्या का समाधान करते हैं तथा इसी माध्यम से सीखते रहते हैं
- आधार - सुकराली/प्रश्नोत्तर विधि है

7. वास्तविक उद्बोधन विधि → ब्लेक्स ऑरेंडार्न

- यह वास्तविक में विचारों का तुलना उत्पन्न करने वाली विधि
- यह विधि छात्रावस्था में सृजनात्मकता के विकास हेतु विकसित की गई।

8. प्रयोगशाला विधि →

- इस विधि में सैद्धांतिक ज्ञान के प्रयोगों द्वारा पुनर्गठित किया जाता है
- यह एक क्रियात्मक विधि है, जिसमें बालक स्वयं विभिन्न प्रयोग करके अपने आचलिक जगता द्वारा सिखाते हैं
- यह विधि निम्न सिद्धांतों पर आधारित है

Learning by doing - करके सीखना
 Learning by observation - आचलिक द्वारा सीखना

- यह विधि आगमनात्मक चिंतन पर आधारित है -

शिक्षण सूत्र → ज्ञात → अज्ञात
 विधीष्ट → सागान्य
 उद्बोधन → नियम

चरण पर -

1. उद्देश्य निर्धारण
2. उपकरण व उच्च संसाधन
3. प्रयोग करना प्रेक्षण जांचित
4. प्रयोगों का विश्लेषण
5. सामान्यीकरण
6. सत्यापन

शुभ -

1. मनोद्रियो व कर्मोद्रियो द्वारा ज्ञान प्राप्त
2. व्यापक ज्ञान
3. सक्रिय होकर वास्तविक सीखता
4. मनोवैज्ञानिक विधि
5. क्रियात्मक पद्धति - कौशल विकास

दोष -

1. सावधानी उत्प्रेक्षित
2. शिक्षक की शक्ति अतिमहत्वपूर्ण
3. संसाधनों की कमी

उ आलयन विधि -

- इस विधि में बालक विभिन्न उदाहरणों का निरीक्षण करते हुए उनसे स्वच्छता सीखते हैं।
 - इसके आधार पर नियम/मूल/सिद्धांत की स्थापना की जाती है।

चरण -

1. विभिन्न उदाहरणों का प्रस्तुतीकरण
2. उदाहरण का निरीक्षण + चर्चा की खोज
3. नियम/मूल/सिद्धांत की स्थापना
4. विभिन्न उदाहरणों द्वारा सत्यापन

सिद्धांत मूल - उदाहरण - नियम
 विशेष - सामान्य
 स्थूल - सूक्ष्म
 मूल - उभूत

- गुण - 1. नवीन साधनों के शिक्षण के लिए उपयुक्त विधि है
 2. प्राप्त ज्ञान सजायी होता है
 3. शिक्षण के कारण छात्रक युक्त रूप अयुक्त साधनों को समझता है।
 4. मनोवैज्ञानिक विधि है
 5. प्रारंभिक स्तर गणित व विज्ञान शिक्षण कि सर्वोत्तम विधि है।

- दोष - 1. पाठ्य पुस्तकों का उभाव
 2. विशेष प्रशिक्षित अध्यापकों की आवश्यकता
 3. समय पर पाठ्यक्रम पूर्ण नहीं होता है।

10. निम्न विधि →
 इस विधि में शिक्षक सबसे पहले बालक को नियम/सूत्र/सिद्धांत का ज्ञान कराता है तथा उसके पश्चात् उस पर आधारित विभिन्न समस्याएं दिये कराकर नियम या सिद्धांत का ज्ञान कराता है।

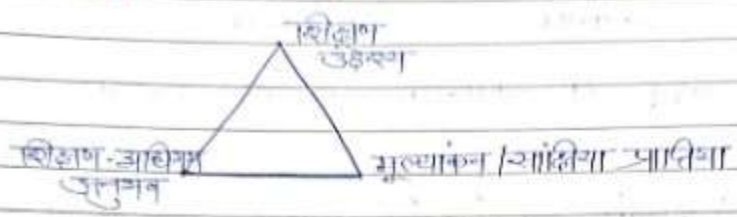
- पक्ष - 1. नियम/सूत्र/सिद्धांत प्रस्तुत
 2. छात्रों का शिक्षण
 3. नियम/सूत्र/सिद्धांत का प्रयोग
 4. विभिन्न उदाहरणों द्वारा अभ्यास

सूत्र - नियम - उदाहरण ; उदाहरण से ज्ञान
 सूत्र - सूत्र ; प्रमाण से प्रमाण
 अभूत - युक्त
 सामान्य - विशिष्ट

- गुण - 1. रक्षण शक्ति का विकास
 2. समय पर पाठ्यक्रम पूर्ण

- दोष - 1. मनोवैज्ञानिक विधि
 2. रक्त प्रवाही का विकास
 3. प्राप्त ज्ञान उपचार

According to क.उ. ब्लूम - शिक्षण निष्पत्तीय प्रक्रिया है



- निर्धारित शिक्षण उद्देश्यों के अनुसार बालकों के व्यवहार में अपेक्षाकृत परिवर्तन लाने के लिए शिक्षण आधिगम्य अनुभव प्रदान किये जाते हैं, इन उद्देश्यों की प्राप्ति की सीमा जानने हेतु मूल्यांकन प्रक्रिया अपनाई जाती है
- मूल्यांकन एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है
- इसका शिक्षण उद्देश्यों के साथ प्रत्यक्ष संबंध होता है
- यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है

क.उ. ब्लूम - मूल्यांकन योग्यता निर्धारण की प्रक्रिया है जो शिक्षण आधिगम्य प्रक्रिया की प्रभावशीलता को जांचती है

अल्फ्रेड डे टारड ने - किसी अनुभव की उपयोगिता के संबंध में निर्णय देना मूल्यांकन है

केम्बे डे कार्लविकट - मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसमें यह जांचा जाता है कि शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई? बालकों के व्यवहार में कितना परिवर्तन आया तथा शिक्षक ने इस हेतु कितना प्रयास किया।

जिम्स मिचेलिन तथा एन - विद्यार्थियों के व्यवहार में विद्यालय द्वारा लाए गए परिवर्तनों के संबंध में प्रयोगों का सम्बंधन संकलन एवं उनकी व्याख्या ही मूल्यांकन कहलाता है।

मापन - किसी भी वस्तु की आतात्मक रूप से व्याख्या करना।

स्वीडिस - मापन पूर्व निर्धारित आसरे के आधार पर किसी वस्तु के अंक प्रदान हैं

मापन के प्रकार → स्वीडिस ने 4 प्रकार -

1. नात्मिक मापन - इसमें केवल वस्तुओं के नाम प्रदान किया जाता है, इसमें कम अनुभवी मापन जैसे जोड़पुरी, घासी, बेरोजगारी

2. कथिक मापन - इसमें विभिन्न वस्तुओं के अर्थ तुलना करके कम निर्धारित किया जाता है। प्रथम, द्वितीय, तीसरे क्रम

3. अंतरित मापन - विभिन्न स्तरों पर के आधार पर मापन किया जाता है, इस मापन में कथिक स्तरों के अति समान अंतराल पाया जाता है, इसमें विशेष रूप से नही पाया जाता, केवल (+) संक्रियाएँ

4. आनुपातिक मापन - इस प्रकार के मापन में विशिष्ट अंक प्रदान किये जाते हैं, इस मापन प्रणाली में विशेष अल्प बिन्दु पाया जाता है, यह सर्वा परिचारित मापन है। इस मापन से प्राप्त परिणामों पर सभी गणितीय संक्रियाएँ (+, -, ×, ÷) उपलब्ध जा सकती हैं।

मूल्यांकन	जापन
1. व्यापक	व्यापक
2. सर्वांगीण विकास की जांच	अना-जानात्मक पक्ष
3. नातात्मक/सुणात्मक	जात्रात्मक
4. जापन के अग्रगण्य मूल्यांकन श्रेष्ठ प्रक्रिया	जापन मूल्यांकन की पूर्ण आवश्यकता है।

एक श्रेष्ठ मूल्यांकन की विशेषताएं -

- 1. वस्तुनिष्ठता →**

 - वह मूल्यांकन वस्तुनिष्ठ होगा जिसमें परिणाम जांच कला की सखी, असोक्षा, विचार का परिणाम पर प्रभाव नहीं पड़े
 - वह मूल्यांकन वस्तुनिष्ठ होगा जिसमें डालन- डालन जांच कलाओं द्वारा जांचने पर भी प्रभाव ना पड़े.
 - मूल्यांकन की वस्तुनिष्ठता को बरकरार रखने के लिए प्रस्तावना में शामिल किए गए प्रश्न आदितीय रूप वाले होने चाहिए
- 2. विश्वसनीयता →**

 - परिणाम में स्थिरता
 - जांच में शुद्धता
- 3. वैधता →**

 - वह मूल्यांकन जो निर्धारित उद्देश्य की पूर्ति करने में सक्षम है
- 4. व्यापकता →**

 - वह मूल्यांकन जो पाठ्यक्रम के प्रत्येक पहलू की जांच करने में सक्षम हो।
- 5. सततता →**

 - श्रेष्ठ मूल्यांकन वह होता है जो आवधिक नही लेकर सतत होता है।
- 6. विभेदकारिता →**

 - एक विभेद/वर्गीकृत करना
 - मूल्य रखने से कठिन → (मूल्य-समावेशित)

7. व्यावहारिकता →

- विशेषताएं - वास्तविक परिस्थितियों में लागू किया जा सके
- तबू रागव में पूर्ण
- प्रश्नों की भाषा स्पष्ट, सुगम्य
- विद्यालय के संसाधन के अनुरूप हो।

आकलन →

यह मापन से विस्तृत लेकिन मूल्यांकन का एक भाग होता है
इसमें आन्तर्त्मिक रूप से प्राप्त परिणामों की व्याख्या उच्च
शक्तियों के द्वारा अर्थ प्रदान करते हुए की जाती है।

प्रकार -

- | | |
|--------------------------|-------------------------|
| 1. सीखने के लिए आकलन | Assessment for learning |
| 2. सीखने का आकलन | Assessment of learning |
| 3. सीखने के रूप में आकलन | Assessment as learning |
| 4. सीखने में आकलन | Assessment in learning |

मूल्यांकन के व्यापन/तन्त्रीक/प्रविधि



मातात्मक प्रविधि → 1. बौद्धिक -

- ये मूल्यांकन बालक की आधुनिक अधिव्याक्ति, व्यापक प्रवाह, उच्चतर दक्षता, आत्म विश्वास आदि दक्षताएं जाचने के लिए आयोजित किए जाते हैं।
- प्राथमिक स्तर पर अधिक उपयोगी

2. लिखित -

- (1) परस्तुनिष्ठ → बालक के ज्ञान, सुधनाओं से संबंधित प्राप्त करने के लिए आयोजित होता है।
 इस प्रकार के मूल्यांकन में व्यापकता, परस्तुनिष्ठता, निरूपसनीयता के गुण पाये जाते हैं।
 दोष → ज्ञान की गहनता का पता नहीं चलता
 → अधिव्याक्ति/लेखन की दायता, क व्यापकी दक्षता आदि की जांच नहीं लेती है।
 → बालक की रचनात्मकता का पता नहीं लगाया जा सकता।

(ii) निबन्धात्मक →

गुण → उच्च संज्ञानात्मक क्षमताओं (तर्क, चिंतन, विश्लेषण) का मूल्यांकन

→ ज्ञान की गहनता

→ भाषा की अभिव्यक्ति एवं संज्ञानात्मक योग्यता की

दोष → कस्तुरिष्ठता, विश्वसनीयता, व्यापकता का अभाव

गुणात्मक प्रविधि →

1. पोर्टफोलियो -

- किसी बालक के विशिष्ट गुणों को प्रदर्शित करने वाला बृहद रिकॉर्ड जिसमें उसके गुणों व उपलब्धियों को जम्मा पत्र के साथ अभिलेखित किया जाता है
- यह छात्र, शिक्षक, अभिभावक व सहायी छात्रों के लिए उपयोगी होता है

2. संचयी अभिलेख -

- बालक के शिक्षा प्रारंभ होने से लेकर उच्च तक की सम्पूर्ण शैक्षणिक व सांख्यिक गतिविधियों की उपलब्धियों की सम्पूर्ण जानकारी इस रिकॉर्ड में होती है।
- बालक की संचय, योग्यता, शैक्षणिक अभिवृत्ति, आनासिक स्तर आदि का पता लगाया जा सकता है।
- इसका प्रयोग स्थापन मूल्यांकन के लिए किया जाता है

RAE (धारा - 30) → प्रारंभिक शिक्षा पूर्णता के तहत संबंध में 'संचयी अभिलेख' प्रस्तुत किया जाता है।

3. उपाख्यान रिकॉर्ड →

- यह आकारिक अवलोकन पर आधारित ^{अवलोकन} बर्तनाओं को दर्ज करने के लिए प्रयुक्त रिकॉर्ड है
- इससे बालक की छुपे हुए योग्यताओं का पता लगाया जा सकता है।
- यह अभिलेख शिक्षक, अभिभावक मिटिंग का आधार होता है।

4. प्रश्नावली विधि → सुझाव
- प्रकार - 1. बंद प्रश्नावली → निश्चित
 - 2. खुली " → एवं विवेक से उत्तर
 - 3. मिश्रित " → बंद + खुली
 - 4. निरवित " → चिंतो के आधार पर उत्तर

5. जांच सूची →
 - बालक के आवात्मक पक्ष के जांच हेतु प्रयुक्त विधि
 - इसमें बालक को विचार/तथ्यों के प्रति सहमति/असहमति प्रकट करनी होती है। इसके आधार पर मूल्यांकन किया जाता है।

6. क्रम निर्धारण आपनी →
 - इस विधि में विचारों या भावों को निश्चित क्रम में व्यवस्थित करना होता है।
 - प्रयोज्य को एक स्केल के विभिन्न बिंदुओं के आधार पर मूल्य स्थापना देने के लिए कहा जाता है।
 - 0, 5, 7 बिंदु आधारित आपनीया प्रयुक्त हैं, जिसे से 5 बिंदु प्रणाली सर्वाधिक लोकप्रिय है। (प्रतिपादक - डेनिस सिफ्ट)

- 5 Point Rating scale -
- (i) सर्वव (ii) माया/अक्षय 3 (iii) डीसल
 - (iv) कधी-कधी (v) कधी नहीं

7. साक्षात्कार →
 - किसी बालक के आत्मक मूल्यांकन हेतु उसे प्रत्यक्ष रूप से सख्त पूछ कर बालक का मूल्यांकन किया जाये।
 प्रकार -

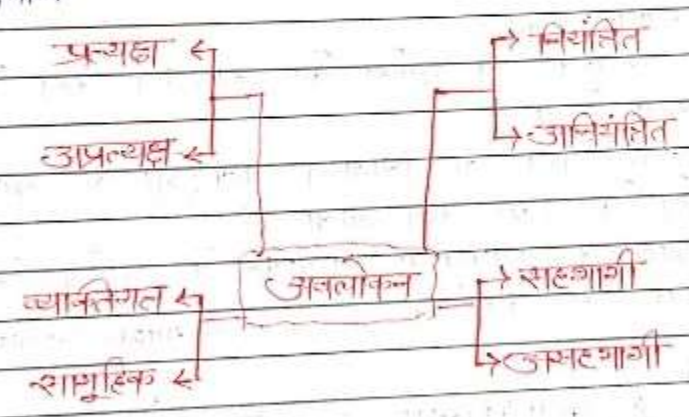
- 1. संरचित साक्षात्कार - पूर्व निर्धारित
 - 2. असंरचित " - पूर्व निर्धारित नहीं
 - 3. अर्धसंरचित " - विषय वस्तु निर्धारित
- [सख्त संरचना अनियोजित]

8. आश्रितता आपनी →

- बालक का दृष्टिकोण जानने के लिए प्रयुक्त विधि
- इसमें बालक को किसी विषय पर विचार व्यक्त करने के लिए कहा जाता है।
- उसके द्वारा व्यक्त किए गए विचारों पर उसके दृष्टिकोण का पता लगाया जाता है।

9. अवलोकन →

- किसी बालक की गतिविधियों को देखकर प्राप्त प्रेक्षणों के आधार पर बालक का मूल्यांकन करना
- पूर्व प्राथमिक व माध्यमिक कक्षाओं में मूल्यांकन की ज़रूरत विधि



10. हल कार्य →

- यह मूल्यांकन के समान ही है, लेकिन रैंकिंग नहीं होता है
- एक निश्चित अवधि के दौरान इस कार्य को पूरा किया जाता है।
- इस कार्य की निष्पत्ति के आधार पर बालक का मूल्यांकन किया जाता है।

वर्तमान शिक्षण प्रणाली में गतिविधि आधारित शिक्षण (ABL) को बढ़ावा दिया जा रहा है

(Activity based learning)

छात्र व शिक्षक किसी भी घटना को समझने के लिए विभिन्न विद्याकल्पों का उपयोग कर सकते हैं, ये विद्या कल्प आधुनिक गतिविधियों या आधुनिक व्याक्तियों का प्रयोग करके हेतु शिक्षण कार्यक्रम को सुचारु रूप से आगे बढ़ते हैं

विद्याकल्प के उद्देश्य →

- अवधारणा को स्मृत रूप में संक्षिप्त पाता है
- शिक्षक व छात्र दोनों सक्रिय रहने में महत्वपूर्ण
- विषय-वस्तु को रोचकता प्रदान
- प्राकृतिक घटनाएँ को मूर्त रूप में देखा सकते हैं
- आविष्कार व कर्तव्यो द्वारा ज्ञान प्राप्त
- छात्र अवलोकन द्वारा सिखते हैं।

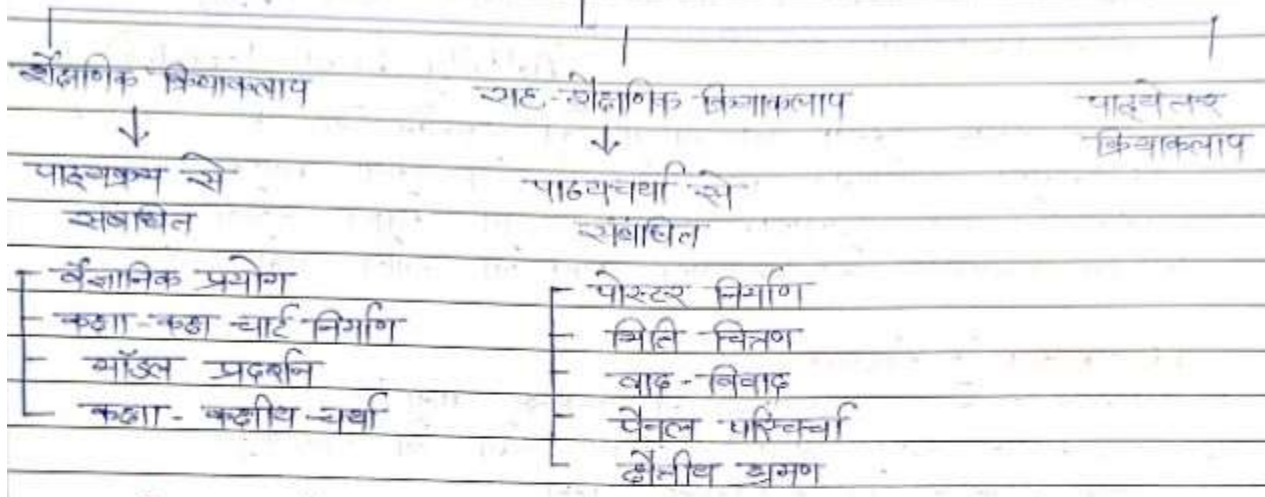
आवश्यक तत्व →

1. मनोरंजक
2. सुनोतीपूर्ण
3. उचित आधारित
4. रोचकता

विद्याकल्प के चरण →

1. उद्देश्य निर्धारण
2. योजना विनिर्माण
3. विद्याकल्पन
4. मूल्यांकन

क्रियाकलाप के प्रकार



चर्चा → किसी विषय पर छात्र व अध्यापक के द्वारा विचार-विमर्श करते हुए नवीन विचार या निष्कर्ष पर पहुँचना चर्चा कहलाता है, चर्चा उद्देश्य केन्द्रित होती है

- प्रकार - 1. शिक्षक - छात्र चर्चा
 2. छात्र - छात्र चर्चा

वाद-विवाद → किसी मुद्दे के सारसत्मक व नपससत्मक पहलुओं पर चर्चा कर ककरना वाद-विवाद कहलाता है।
 - वाद-विवाद से किसी मुद्दे पर स्वस्थ ढररर की जाती है

पैनल परिचर्चा → ररी ए डांकसरीट (प्रतिपादक) 4-8 सदस्यों के द्वारा (संगुठ) किसी विषय पर विचार व्यक्त कररना तथा छात्रों की संसुओ व सससषाण कररना पैनल परिचर्चा कहलाता है।

सूचना एवं संप्रेषण तकनीक

उद्यम → जापजे का भाषाभाषित समूह

सूचना → जांके का न्वास्थित रूप, निरि निरिष्ट निरुक्त प्राप्त कि जा सके
उद्य को process करके सूचना में बदला जा सकता है।

संप्रेषण → सूचनाओं का एक स्थान से दूसरे स्थान तक स्थानान्तरण करना

तकनीकी → उपलब्ध साधनों का अधिकतम उपयोग

→ डिजिटल सूचनाओं को निर्मित, संग्रहित करके संप्रेषित कर सके, ऐसा उपकरणों का एक सेट सूचना एवं संचार तकनीकी कहलाता है

सूचना एवं संप्रेषण तकनीक

↓ (Information and Communication Technology) ICT ↓

संश्लिप्त रूप में ICT सर्वप्रथम "डिजिटल डेविज" ने कहा

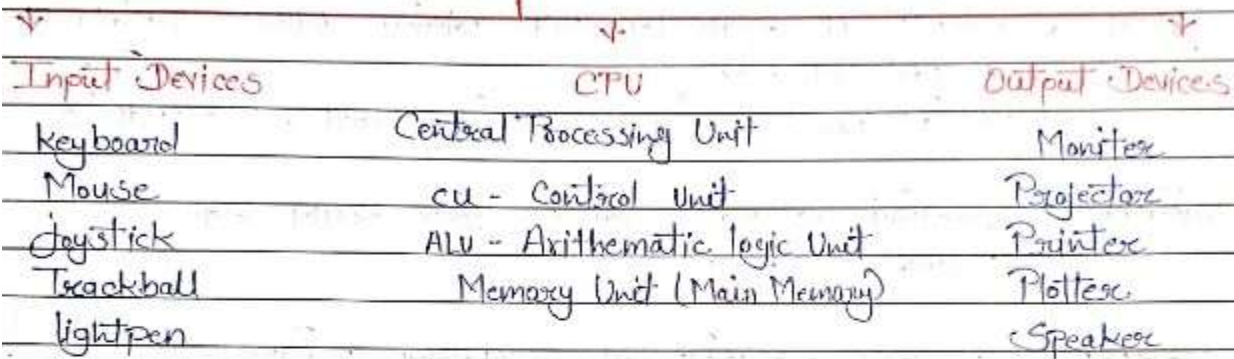
1. निर्मित करना	Create
2. संग्रहित "	Store
3. पुनः प्राप्त "	Retrieve
4. प्रेषित "	Send
5. प्राप्त करना	Receive
6. संशोधन	Format

ICT उपकरण →

परम्परागत → टेलीग्राम, Fax, रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन, पेंगेनल, 0111, रजिस्ट्रार लुफ्त सागरी, गौकीक सागरी

आधुनिक → कम्प्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल, टेबलेट, उपग्रह डिजिटल प्रोजेक्टर आदि।

Computer



BCR = Barcode Reader

OMR = Optical mark Reader

MICR = Magnetic ink character Recognition

QR Code = Quick Response

OCT = Optical character Recognition

Scanner

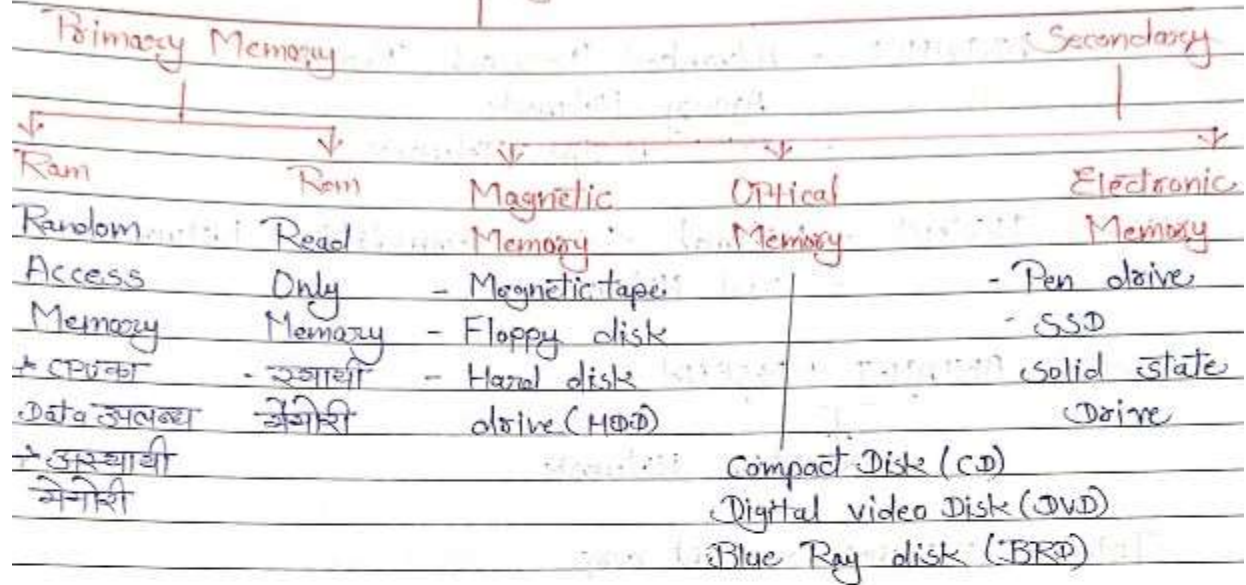
Micro Phone

Web cam

Digitizer - Stylus

- Input + Output Devices →
1. Touch Screen
 2. Fax
 3. Modem

Memory



Network → सूचना संप्रेषण हेतु devices का जाल Network कहलाता है

1. PAN → सबसे छोटा Network
Personal Area Network
Bluetooth, Airdrop

2. LAN → Local Area Network

3. MAN → Metropolitan Area Network

4. WAN → सबसे बड़ा Network
Wide Area Network
Internet

Internet → Networks का Network

1969 → ARPANET - Advanced Research Project Agency Network
 - दुनिया का 1st Network

1986 → NSFNet - National Science Foundation Network
 - 2nd Network

1989 → ARPANET + NSFNet
 ↓
 International Network

Internet का जनक = Vint Cerf

→ भारत में Internet की शुरुआत - 15 August 1995

→ भारत की प्रथम ISP (Internet Service Provider)
 VSNL

Internet connection

Dial up Connection	Broadband Connection	Wireless Connection
ISP को फोन dial करना होता है।	→ DSL connection Digital subscriber line	→ Wifi
	→ Telephone line का प्रयोग	→ LiFi
	→ cable connection co-axial cable	→ Light fidelity
	→ OFC connection optical fiber cable	

Protocol → "इन्टरनेट पर संचार के लिए निर्णय का समूह"

इन्टरनेट का मानक Protocol → TCP/IP

TCP → Transmission control protocol

IP → Internet protocol

http → hypertext transfer protocol

ftp → file transfer protocol

Website →

Webpage का समूह website कहलाता है

URL → Uniform Resource locator

Web page का Address

WWW → world wide web

-विम बनरि ली (जनक)

Search Engine → इन्टरनेट पर User द्वारा खोजे गए परिणाम

Search engine उपलब्ध करवाता है।

जैसे → Google, yahoo, msn search, baidu,

duck duck go, bing - Micro soft

Imp

E-mail → electronic mail, जनक → Ray Tomulson

From → Rutilill

To,

cc - carbon copy

Bcc - Blind carbon copy

Subject -

Message

Attachment → multimedia file send करने के लिए

max file size → 25 MB

↓
1st mail

↓
some like

↓
Purescriptop

Trash → Email का Recyclebin

Unsolicited mail - Junk mail - User के लिए अनुपेक्षित mail
Spam - अवांछित mail

Draft - Unsent mail

e-mail Address →

abc @ gmail . com
↓ ↓

Username domain name

64 + 1 + 955 - 320 → (Max character in a mail address)

ICT का शिक्षा में योगदान → ICT से शिक्षा प्राप्त कैसे तथा देने में प्रयोग हुआ है परिवर्तन

- CLASS (1984-85)
 - ↳ Computer literacy and Study in School.
- NCERT द्वारा संचालित कार्यक्रम
- कम्प्यूटर साक्षरता बढ़ाने के लिए कार्यक्रम

EduSat → Educational Satellite

पथक शिक्षा उपग्रह

Launch → 20 Sept. 2001

शैक्षिक क्षेत्र में संचार क्रांति लाने के लिए

कल्प CALP → Computer Aided Learning program

समय - 2001-05

- संस्थान के 186 विद्यार्थियों में

- 2008-09 - सम्पूर्ण संस्थान में संचालित

↳ IIT @ School / Scheme

CLICK → Computer literacy Initiative for comprehensive knowledge.

कम्प्यूटर साक्षरता को व्यापक रूप से प्रसारित करने के लिए

ई-जान पोर्टल → कक्षा 1 से 12 तक की पाठ्य सामग्री उपलब्ध करने के लिए।

ज्ञान दर्शन - दैनिक T.V. Program

ज्ञान वाणी - दैनिक रेडियो Program

Diksha → Digital Infrastructure for knowledge sharing

↳ शिक्षक शिक्षण कार्यक्रम

↳ NISHTHA

↳ National Initiative for school head and Teacher's Holistic advancement

Smile → Social Media interface for Learning engagement

ठवायल + Rsera उदयपुर द्वारा संचालित कार्यक्रम

मार्ग - 9 अक्टूबर 2020

- रीचकता

- चिंतन

पथविर्ण शिक्षण में चुनौतियाँ

1. प्राथमिक स्तर पर छोटे बालक की आवश्यकताएँ स्वयं शिक्षक को निर्धारित करना होती है।
2. बालक अपनी आवश्यकताएँ निर्धारित नहीं कर पाता, शिक्षक को पथविर्ण शिक्षण की आवश्यकता तथा पथविर्ण शिक्षण के तरीके एवं उपागम चुनने से संबंधित चुनौती का सामना करना पड़ता है।
3. पथविर्ण शिक्षण के उद्देश्यों का निर्धारण करना भी एक चुनौती है।
4. पथविर्ण एक अतिशील विषय है, इसके शिक्षण उद्देश्यों में समय-समय में परिवर्तन आता है।

बालक की
 पथविर्ण शिक्षण के स्तर में चुनौतियाँ

- प्रत्येक बालक को सिखने में वैयक्तिक शिन्ता का महत्वपूर्ण योगदान होता है।
- प्रत्येक बालक का अलग-अलग मानसिक स्तर, आधिगम प्रवृत्तियाँ, बुद्धि पाई जाती है।
- अध्यापक के सम्मिलन समझ यह चुनौती होती है कि इन सभी विधिनताओं का ध्यान रखते हुए कार्य करवाया जा सके।
- बालक का सामाजिक वातावरण सीखने को प्रभावित करता है।
- बालक की पारिवारिक स्थिति आधिगम को प्रभावित करती है।
- किसी भी बालक के प्रति प्रवृत्ति से ग्रसित होकर कोई भी असामान्य व्यवहार नहीं करना एक चुनौती है।

विद्यालय से संबंधित चुनौतियाँ

- प्राथमिक स्तर पर पथविर्ण शिक्षण के लिए शिक्षण आधिगम सहायक सामग्रियों की उपलब्धता लेना।
- प्रत्येक विद्यालय में पथविर्ण शिक्षण कक्षा की कमी होती है।
- एक आदर्श पथविर्ण शिक्षण कक्षा का क्षेत्रफल 1200^{वर्ग} फीट लेना चाहिए जिसमें लगभग 50 बालक बैठ सके।

सरकार से संबंधित चुनौतियाँ :-

- पर्यावरण शिक्षण को सरकार द्वारा उपेक्षित कर पाने पर भी के कारण पर्यावरण शिक्षण के संबंध में नवानार नहीं हो पाते

- एक शिक्षक का दायित्व है कि वह इस चुनौती को स्वीकार करके हुए सखय नवानारी शिक्षण करवाने का प्रयास करें

पाठ्यक्रम से संबंधित चुनौतियाँ :-

- पर्यावरण अध्ययन का हॉत व्यापक होने पर पाठ्यक्रम में किन-किन तुरों को व्याखना शामिल किया जाये पाठ्यक्रम निगमि सभ्यती के सगल यह चुनौती लेती है।

विश्व भूगोल मानचित्र

मानचित्र बुक PDF (इम्तलिखित)

PDF : Get Link

राजस्थान की हर प्रतियोगी परीक्षा हेतु उपयोगी

- ❖ राजस्थान सामान्य ज्ञान के नोट्स डाउनलोड करने के लिए नीचे दिए गए [इमेज](#) पर क्लिक करें --
- ❖ राजस्थान की विभिन्न भर्ती परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण नोट्स [Free](#) डाउनलोड :-
- ❖ राजस्थान कला एवं संस्कृति, भूगोल, इतिहास सभी के नोट्स [Free](#) डाउनलोड करने का एकमात्र [Google](#) वेबसाइट :- Rajasthanclasses.in



राजस्थान सामान्य ज्ञान

कला संस्कृति, भूगोल, इतिहास संपूर्ण राजस्थान जीके

- सभी टॉपिक वाइज नोट्स व प्रश्नोत्तरी **PDF**
- सभी भर्ती परीक्षाओं हेतु उपयोगी **PDF**

राजस्थान GK ALL PDF's

Rajasthanclasses.in

हर भर्ती की न्यूज सबसे पहले..

यहां उपलब्ध रहेगी 🖱️ 🖱️

Latest News : Get Link

अन्य किसी भी प्रकार की PDF's के लिए

गूगल सर्च करें या क्लिक करें 🖱️

Google



rajasthanclasses.in



Telegram
चैनल
ज्वाँइन करें



YouTube पर
ऑनलाइन क्लासेज भी देखें

हिंदी व्याकरण GK
महत्वपूर्ण प्रश्नों की PDF
PDF : Get Link

भारत सामान्य ज्ञान
महत्वपूर्ण प्रश्नों की PDF
PDF : Get Link

विज्ञान सामान्य ज्ञान
महत्वपूर्ण प्रश्नों की PDF
PDF : Get Link

राजस्थान GK 2025
महत्वपूर्ण प्रश्नों की PDF
PDF : Get Link

राजस्थान GK 2025
नोट्स PDF
PDF : Get Link

[Click Here : Get More PDF](#)